अध्याय दो

मेहरुन्निसा परवेज़ व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय दो
मेहरुन्निसा परवेज़ व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्यकार समाज का प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि व्यक्तियों के समूह को ही समाज कहते हैं। समाज के मनोभावों के प्रतिनिधि के रूप में साहित्यकार अपनी रचनाओं में प्रकट होता है। समाज की उन्नति और अवनति साहित्य पर निर्भर है। उन्नत समाज से प्रेरित होकर साहित्यकार श्रेष्ठ साहित्य का सृजन करता है।

साहित्यिक क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान रखनेवाली लेखिका है मेहरुन्निसा परवेज़। आधुनिक महिला लेखिकाओं में उनका स्थान प्रमुख है। हिन्दी कथा साहित्य में इनको मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा लेखिका माना जाता है। इनकी कृतियाँ अनुभूति के आधार पर लिखी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन की तकलीफों और विवशताओं का मार्मिक चित्रण किया है। सामाजिक समस्याओं से लड़कर परिवर्तन लाने की कोशिश उनकी कृतियों में नज़र आती है। स्त्री-पुरुष संबन्ध जीवन की विविध समस्याएँ, प्रेम और सेक्स का आधुनिक स्वरूप आदि इनकी कृतियों में उभर आयी है। पाश्चात्य प्रभाव से नष्ट होती हमारे परंपरागत आदर्शों को भी लेखिका ने अपनी कृतियों में प्रस्तुत किया है। उनकी कई कृतियाँ ऐसी है जो लेखकों से टक्कर लेनेवाली है।

1. व्यक्तित्व

1.1 जीवन परिचय

मेहरुन्निसा परवेज़ का जन्म 10 दिसंबर 1944 को मध्यप्रदेश के बालघाट जिले के बहेला गाँव में हुआ। बच्चपन से ही साहित्य रचना में जुडी रही। इनके पिता

स्वर्गीय ए.एच. खान मध्यप्रदेश के एक रिटायर डिप्टी कमीश्नर थे। मेहरुन्निसा परवेज़ की माँ का नाम शेहज़ादी बेगम है।

मेहरुन्निसा परवेज़ के जीवन का विवरण बहुत कम उपलब्ध है। थोडा-सा उपलब्ध है वह उनकी रचनाओं में यंत्रतंत्र बिखरा पडा है। कडुवाहट भरी उनके निजी जीवन की झलक उनकी रचनाओं में दिखाई पड़ती है। अपने माता-पिता के दाम्पत्य जीवन की कटुता बचपन से ही दुबली-पतली, गोरे रंग की बालिका भयभीत आँखों से देखा करती थी। 'हर दिन, हर रात, हर बात पर घर में झगडे होते और झगडे भी ऐसे कि सारे मोहल्ले में आवाज़ गूँजती। और हम दो भाई-बहन घर के किसी सूने कमरे में, अँधेरे में, एक-दूसरे से चिपटे हुए रोते रहते जब से होश संभाला, अपने घर में शीशे के टुकडे, खून और आँसू ही देखे। औरों के घर से हमारा घर का वातावरण इतना भिन्न क्यों है, समझ नहीं आता।'[1] घर के तनावपूर्ण वातावरण ने छोटी लड़की मेहरुन्निसा को तन और मन दोनों से कमज़ोर बना दिया। माता पिता के इस झगडे से दुःखी मेहरुन्निसा ज़्यादातर समय तालाब के किनारे, बाग-बगीचों में या चपरासियों के बच्चों के साथ खेलती थी। घर के झगडे की वजह से छोटी बच्ची मेहरुन्निसा कभी दादी के घर में रहती थी तो कभी नानी के घर। पिता ने दूसरी शादी की तो उसके दिल को काफी चोट लगा।

उनकी बच्चपन ज़्यादातर बस्तर में गुज़री थी। बस्तर की यादों को आज भी वह दिल में संभालकर रखती है। बस्तर की बारे में वह कहती है "बस्तर ! जिसे मैं कभी भूल नहीं पाई। जिन्दगी का पहला पाठ, यथार्थ का पहला शब्द मैं ने यही गढ़ा था। बस्तर की माटी में खेलकर मेरे नन्हे पैर जवान हुए थे। बस्तर का वह भयानक जंगल आज भी मेरे मन में बसा है। जंगली फूलों की भीती गन्ध आज भी थके दिमाग को तरोताजा करती

---

1. गर्दिश के दिन - डॉ. मधुकर सिंह - पृ. 30

है। मैंने शब्दों की एक सेना अपने लिए तैयार की, धीरे-धीरे ढेर सारी फौज इकट्टी कर ली। अपने को सिकन्दर बना लिया। मेहरुन्निसाजी के इस कथन के द्वारा बस्तर के प्रति उनकी लगाव का चित्रण व्यक्त होता है।

मेहरुन्निसा परवेज़ जब नवी कक्षा में पढ़ रही थी, तब उनकी शादी उर्दु के प्रसिद्ध शायर राऊफ परवेज़ से हुई। उसने अपनी इच्छा से शादी की थी। शादी के बाद भी उसने पढ़ाई ज़ारी रखी और बी.ए. की उपाधि प्राप्त कर ली। शादी से पहले जितने भी जिन्दगी के सुखत सपने देखे थे वह सब शादी के बाद टूट गये। पिता का रहन-सहन और आचरण व्यवहार पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित था, इसलिए सामंतवादी विचारधाराओंवाले मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी मेहरुन्निसा ने धार्मिक बाह्याडंबरों को प्रधानता नहीं दिया। लेकिन विधि की विडंबना थी कि ऐसे स्वच्छन्द सोचविचार रखनेवाली मेहरुन्निसा को कट्टर मुस्लिम परिवार में पहूँचना पडा। न चाहते हुए भी उसने परिस्थिति के अनुसार अपने को बदल दिया। लेकिन शादी के दस साल बाद भी माँ न बन पाने का कलंक उसे सहना पडा था। स्त्री का बाँझ रह जाना मुस्लिम समाज में किसी अभिशाप से कम नहीं होता, यह दर्द अनुभवी व्यक्ति ही बता सकती है। कुछ साल बाद उनकी दाम्पत्य जीवन टूट गया और मेहुन्निसाजी ने दूसरा ब्याह किया। जिनके साथ उनके दूसरे ब्याह हुआ उनका नाम है भगीरथ प्रसाद। वह एक ऐ.ए.एस आफिसर थे। उनके दो बच्चे हुए - एक बेटा और एक बेटी। बेटे का नाम है समर प्रसाद जिसकी मृत्यु उसके सत्रहवीं साल में हो गई थी। वह अपने बेटे के बारे में कहती हैं - "समर अपने जीवन के सिर्फ सत्रह वसन्त ही देखे।" 'समर' नामक कहानी संग्रह अपने प्रिय पुत्र स्वर्गीय समर प्रसाद को समर्पित करने के लिए लिखा था। बेटे के बारे में सोचने से वे दुःखी हो जाती है। उनकी बेटी का नाम है - श्रीमाला प्रसाद। अब वह भोपाल में रहती है।

मेहरुन्निसा परवेज़ लेखन कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखती हैं। इसलिए उन्होंने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुडकर काम किया और स्वतंत्र सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी रही। इस कारण श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ सन् 1974 में बस्तर जिले के बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना की अध्यक्षा बनी। बाद में 1977 में वे मध्यप्रदेश समाज कल्याण मंडल में बस्तर की ओर से सदस्या बनी। बस्तर जिले से ही उन्होंने मध्यप्रदेश समाज कल्याण मंडल के सदस्या के रूप में आदिवासी महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने हेतु प्रयास किया है। इसके अलावा वे आकाशवाणी की कार्यकारिणी समिति तथा बैंकिंग भर्ति बोर्ड की सदस्या रही। 1993 से 1996 तक तीन वर्ष मध्यप्रदेश पिछडा वर्ग आयोग की सदस्या (राज्य मंत्री स्तर) रही। वे एक सक्रिय समाज सेवी के रूप में मध्यप्रदेश राष्ट्रीय एकता परिषद् की सदस्या हैं। मध्यप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में नव गठित "मध्यप्रदेश महात्मागाँधी ट्रस्ट" की वे न्यासी है। डॉ. अंबेदकर शोध संस्थान, महू में राज्यपाल के प्रतिनिधि के रूप में कार्यकारिणी सदस्या रही। वे समाज कल्याण, हिन्दी, उर्दु भाषाओं का उत्थान, महिला एवं बालविकास तथा कमज़ोर वर्गों के उत्थान में संलग्न प्रदेश एवं देश की कई सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में सक्रिय रूप में सेवा कर रही हैं। इस प्रकार मेहरुन्निसा परवेज़ लेखन और सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग ले रही है।

सामाजिक एवं साहित्यिक कार्यों में व्यस्त होने के बावजूद भी श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ प्रदेश एवं देश की कई संस्थाओं में सक्रिय है।

1.2 पुरस्कार और सम्मान

सामाजिक समस्याओं पर आधारित मेहरुन्निसाजी की कहानियाँ तथा साक्षात्कार दूरदर्शन जैसे प्रसार माध्यमों में प्रसारित हुए हैं। उनकी लंबी कहानी 'जूठन' पर आधारित

'सितली' नामक धारावाहिक दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित हुई। इसमें सामंतवादी अन्याय एवं सामाजिक विषमताओं का प्रभावात्मक चित्रण है। उन्होंने वेश्यावृत्ति जैसे सामाजिक अभिशाप पर स्वयं टेलिफिल्म 'लाजो बिटिया' (1977) और स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित एक लोकप्रिय धारावाहिक 'वीरांगना रानी अवंतीबाई' (1998) का निर्माण एवं निर्देशन किया है। उन्हें हिन्दी, उर्दु, अंग्रेज़ी के अलावा मध्यप्रदेश की कई आदिवासी बोलियाँ जैसे - हल्वी, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, मालवी आदि का भी अच्छा ज्ञान है। मेहरुन्निसाजी की भाषा सहज और मर्मस्पर्शी है। इस कारण उनकी रचनायें लोकप्रिय हुई है। उनके साहित्य का अंग्रज़ी, उर्दु, मलयालम, नेपाली, पंजाबी, गुजराती, उडिया, मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है। अस्सी के दशक के प्रारंभ में उनके उपन्यास कन्नड भाषा में अनूदित हुआ।

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ द्वारा की गयी साहित्यिक सेवा के लिए देश-विदेश के सरकार ने तथा विभिन्न संस्थाओं ने उनके प्रति आदर प्रकट करते हुए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया। सन् 2005 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। उन्हें सन् 1980 में 'कोरजा' उपन्यास के लिए मध्यप्रदेश सरकार की तरफ से 'अखिल भारतीय महाराजा वीरसिंह जुदेव' राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी उपन्यास को उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनाऊ द्वारा भी पुरस्कार मिला है। सन् 1995 में उन्हें 'सुभद्राकुमारी चौहान' पुरस्कार मिला तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा उन्हें हिन्दी साहित्य की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। मेहरुन्निसाजी को महात्मागाँधी के 125-वें जन्म वर्ष पर क्रियाशील लेखक एवं जनजाती सेवा के लिए 23 मई 1995 को दुर्गा में आयोजित छत्तीसगढ़ सम्मेलन में पुरस्कार सम्मानित किया गया। हिन्दी साहित्य की सेवाओं के लिए उन्हें सन् 1995 में उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया। सितंबर 1999 में लंदन में

आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में राष्ट्रभाषा स्वर्णजयंती के अवसर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य की विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनके लोकप्रिय कहानी संग्रह 'समर' का विमोचन लंदन में संपन्न हुआ। उन्हें जून 2003 में भारत भूषण पुरस्कार मिला। सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका 'समर लोक' के सुसंपादन के लिए 19 जून 2003 को 'श्री रामेश्वर गुरु' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1995 में चरारे शरीफ में हिंसा के समय वे गाँधी शांति मिश्न के मंच पर सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश लेकर कश्मीर पहुँची। उन्होंने लंदन, फ्रांस, रूस आदि देशों की यात्रा करके कई सम्मेलनों में भाग लिया है। वे साहित्य एवं समाज सेवा में निरंत सक्रिय रही हैं।

1.3 साहित्यिक योगदान

हिन्दी साहित्य जगत में मेहरुन्निसा परवेज़ का नाम सम्माननीय है। वह प्रथम मुस्लिम महिला हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य में उच्चकोटि के साहित्य का सृजन किया है। सामाजिक कार्यों के साथ साहित्य पर भी रुचि के कारण संस्थाओं में और अन्य कार्यक्रमों में व्यस्त होने पर भी लेखन नहीं छोडा। उनकी पहली कहानी 'जंगली हिरनी' लोकप्रिय साप्ताहिक धर्मयुग में अक्तूबर 1963 में छपी। 'नई कहानियाँ' में प्रकाशित प्रस्तुत कहानी का अनुवाद पाँच भाषाओं में हुआ। तब से वह निरंतर कहानियाँ एवं उपन्यास लिख रही हैं। वे मर्मस्पर्शी ढंग से सहज, सरल एवं बोधगम्य भाषा में लिखती है। उनकी हर रचना में सामाजिक घटनाओं का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। इसलिए उनकी रचनायें साधारण जनता को अच्छी लगी।

मेहरुन्निसा परवेज़ एक बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभाशाली लेखिका हैं। उन्होंने कहानी और उपन्यास के अलावा संस्मरण जैसी गध्य विधाओं पर भी अपनी कलम चलायी है। बस्तर की आदिवासी संस्कृति, जनजाती एवं महिलाएँ आदि विषयों पर

उन्होंने अपनी कलम चलायी। उनकी रचनाओं में महिलाओं की दयनीय अवस्था एवं समाज के काले कारनामों के विरुद्ध संघर्ष करने की स्पष्ट झलक मिलती है। उनके संस्मरण तथा सामाजिक समस्याओं पर लिखे लेखों ने कमज़ोर वर्गों में सामाजिक चेतना को बढ़ाया तथा उनके उत्थान के लिए सरकार एवं सामाजिक संगठनों को वाँछित सहयोग देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बाँचडा जाति के महिलाओं की उत्थान के लिए अपनी लेखनी द्वारा विशेष कार्य किया। बरसों से चली आ रही वेश्यावृत्ति जैसे अभिशाप को हटाने में एक हत तक उनकी लेखन सहायक सिद्ध हुई।

मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यास और कहानी दोनों में समाज में व्याप्त अनाचार, दिनोदिन टूटते जीवनमूल्य और आर्थिक विपन्नता आदि का चित्रण किया है। अपनी रचनाओं द्वारा स्त्री की पीडा और दुःख भरे जीवन के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की है। उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में मानव के दुख और दर्द को पैनी दृष्टि से देखा-परखा और प्रस्तुत किया है। उपन्यास के मूलभाव को प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में और कहानी कहने की कला में मेहरुन्निसा परवेज ने पूर्ण सफलता प्राप्त की है। निम्नवर्ग की जीवन और उनके शोषण का चित्रण उसने भली-भाँती अपने रचनाओं में प्रस्तुत किया है। एक सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते मेहरुन्निसाजी इन लोगों का जीवन बहुत नज़दीकी से देखा और परखा है। तभी तो उसका प्रभाव उनकी साहित्यिक रचनाओं में भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता हैं।

भारत की प्रतिष्ठित 'समर लोक' नामक साहित्यिक पत्रिका का संपादन तथा प्रकाशन मेहरुन्निसाजी खुद कर रही है। इस पत्रिका ने देश-विदेश के साहित्य जगत में ख्याति अर्जित की है। वे 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' एवं 'सारिका' जैसी पत्रिकाओं के प्रमुख कहानीकार रहीं। उन्होंने 'रविवार' जैसे प्रसिद्ध साप्ताहिक तथा 'नई दुनिया' जैसे दैनिक में नियमित रूप से स्तंभ लिखा। उनके साहित्य विश्वप्रिय है। उनके प्रसिद्ध

उपन्यास हैं - 'आँखों की दहलीज' (1969), 'उसका घर' (1972), 'कोरजा' (1977), 'अकेला पलाश' (1981), 'समरांगण' (2002) 'पासंग' (2004)।

मेहरुन्निसाजी को एक उपन्यासकार के रूप में ही नहीं एक कहानीकार के रूप में भी ख्याति मिली है। उनके लोकप्रिय कहानी संग्रह है - 'आदम और हव्वा' (1972), 'टहनियों पर धूप' (1977), 'गलत पुरुष' (1977), 'फालगुनि' (1978), 'अंतिम चढाई' (1982), 'सोने का बेसर' (1991), 'अयोध्या से वापसी' (1991), 'एक और सैलाब' (1991), 'दहता कुतुब मीनार' (1993), 'रिश्ते' (1993), 'अम्मा' (1997), एवं 'समर' (1999)।

इस प्रकार श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ अपनी बहुमुखी प्रतिभा और विशिष्ट साहित्य सेवा के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार के रूप में विध्यामान है। वह सिर्फ साहित्यकार के रूप में ही नहीं समाज सेविका के रूप में भी विश्व प्रसिद्ध है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर कई शोधार्थी एम.फिल और पी.एच.डी की उपाधियों के लिए शोध कार्य कर रहे हैं।

2. कृतित्व

2.1 उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

2.1.1 अकेला पलाश

'अकेला पलाश' मेहरुन्निसा परवेज़ द्वारा लिखी एक प्रसिद्ध उपन्यास है। विवेच्य उपन्यास 'अकेला पलाश' भारतीय मध्यवर्ग की कामकाजी स्त्री के घर बाहर के यथार्थ की पहचान करनेवाला है। इसमें नारी के अन्तर्द्वन्द्व, शोषक रूप, जीवन की कमियों एवं अभावों को दूर करने की लालसा को चित्रित किया गया है। नारी को सतत संघर्ष करना पडता है। इससे नारी के मन में एक साहसपूर्ण संकल्पना जन्म लेती है। इस

उपन्यास में उसी का जीवंत अभिव्यक्ति किया गया है। कहा जाता है कि इस उपन्यास में किया गया नारी का यथार्थ चित्रण खुद लेखिका का भोगा हुआ यथार्थ है, वही इस उपन्यास में नायिका के जीवन द्वारा सजीव अभिव्यक्त किया गया है। क्योंकि बचपन में देखा गया और गुज़ारा गया वह साया अंत तक छोडती नहीं। इसी संवेदना के साथ उपन्यास की कथावस्तु की सफल योजना की गयी। 'अकेला' पलाश उपन्यास की नायिका तहमीना है। वह अपनी माँ के शोषण का शिकार बनती है। बचपन से ही जिन्दगी के साथ समझौता करते-करते उसे आदत सी बन जाती है। शादी के पहले तक अपने माँ और पिता का, बाद में पति का और समाज का शिकार बन जाती है। कामकाज होने पर भी नारी शादी के बाद बहुत सारे बंधनों में बंध जाती है। वह न तो परिवार या नौकरी छोड सकती है। दोनों को निभाना पडता है। इस यथार्थ का चित्रण करने में मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपनी लेखनी चलाई।

उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है इस उपन्यास की नायिका का नाम तहमीना है। इसकी कथावस्तु को दो पक्षों में विभाजित करके देख सकते हैं। पहले पक्ष में तहमीना अपने माँ-बाप के साथ बिताती है।

तहमीना के पिता एक अयाशी थे। घर के सारे पैसे बाहर खर्च करता था। माँ को हमेशा यह भय था कि बाप के हक्स का शिकार बेटी न बन जाये। एक दिन माँ ने पिता के सामने तहमीना की शादी के बात उठाई। लेकिन वह अपनी बेटी की शादी अपने उम्र के बराबर वाले के साथ कराना नहीं चाहता था। और इस बात को लेकर माँ और पिता के बीच में हमेशा झगडें होने लगे। एक दिन पिता शादी करने की अनुमति दे देता है। इसमें उसकी दिलचस्पी नहीं थी। तहमीना अपने पति जमशेद को पसंद नहीं करती थी। माँ ने अपने सुरक्षा के लिए तहमीना की आहुति दी और वह सफल रही, क्योंकि तहमीना की शादी के बाद यह एहसास पिता को अधिक हो गया कि अब वह एक

शादीशुदा लड़की के पिता है। उनका एक दामाद भी है और उनकी अच्छी-बुरी हरकतों का अपनी लड़की के जीवन पर भी असर पड़ सकता है। माँ पिता को घर से और अपने जिम्मेदारियों से बाँध लेना चाहती थी। और वह इस काम में सफल रही। सामान्य रूप से बेटियाँ अपने सारे सुख, दर्द, परेशानियाँ और मुश्किलें माँ के आँचल में डाल देती हैं। परन्तु तहमीना को इस आँचल का शिकार बनना पडा। जमशेद उसके लिए सफल पति नहीं बन सका। और वह भी सफल पत्नी नहीं बन सकी।

इस कथावस्तु का दूसरा पक्ष तहमीना की शादी के बाद शुरु होती है। तहमीना घर से बाहर कदम रखती है। वह सोचती है कि घर की चार दीवारी से बाहर आ जायेंगे तो शांती पा सकेगी। लेकिन नारी कितनी भी ऊँचे पद पर पहुँचे फिर भी गृहणी के दायित्व से बाहर आ नहीं सकती। कार्यरत नारी को दोनों जिम्मेदारियाँ निभानी पडती है। तहमीना एक कार्यालय के चेयरमान कुर्सी पर बैठती है। फिर भी खुद को निस्सहाय स्थिति में पाती है। और सहकर्मचारियों की बेइमानी और षडयंत्र से बच नहीं पाती। उसके विरुद्ध लड़ना पडता है। तब उसे महसूस होता है कि सामाजिक कार्यकर्ता बनने से सुख जाता है घर बैठना इससे बेहतर है।

तहमीना के साथ आफिस में बाबू और विमला भी काम करते हैं। उसका आफिस एक गाँव में है।

इस उपन्यास में तहमीना की कहानी के साथ गौण कथा का भी चित्रण करती है लेखिका। उसमें तहमीना के रिश्तेदार नाहिदबाजी की कहानी का चित्रण किया गया है। तहमीना के घर में उसके साथ रिश्तेदार नाहिदबाजी भी रहती है। नाहिदबाजी वहाँ के एक अस्पताल में डॉक्टर है। एक दिन नाहिदबाजी ने कहा कि उसे क्वार्टर मिल गया है और वह वहाँ शिफ्ट हो जाना चाहती है। नाहिदबाजी अपने क्वार्टर में शिफ्ट हो जाती है।

डाक्टर महेश अग्रवाल नाहिदबाजी के साथ काम करता है। नाहिदबाजी और डाक्टर अग्रवाल दोनों में दोस्ती हो जाती है।

नाहिदबाजी एक दिन तहमीना के घर आयी। वह बहुत उदास थी। नाहिदबाजी ने कहा कि वह डाक्टर अग्रवाल के साथ शादी करना चाहती है। लेकिन नाहिदबाजी एक मुसलमान परिवार की थी और डाक्टर महेश अग्रवाल एक हिन्दु परिवार के इसलिए दोनों ने कार्ट मारेज करने का फैसल किया। डाक्टर अग्रवाल की माँ को यह शादी मंजूर नहीं थी क्योंकि वह उनका इकलौता बेटा था। फिर भी डाक्टर महेश ने अपने घर में जाकर रहने का फैसला किया।

एक दिन तहमीना की मुलाकात तुषार से हुई। तहमीना ने महसूस किया कि तुषार से मिलकर उसका पति जमशेद बहुत प्रसन्न है। तुषार और जमशेद दोनों में दोस्ती हो गयी। उस दिन के बाद तुषार तहमीना के घर आने लगा। तुषार का घर आना जमशेद को भी पसंद था। तुषार और तहमीना दोनों एक दूसरे को पसंद करते थे।

जमशेद जब इंदौर चला गया तब तहमीना और तुषार दोनों का संबन्ध और भी गहरा हो गया। एक दिन तुषार ने तहमीना से कहा कि "देखो तहमीना जिस दिन तुम्हारे नाम पर कोई धब्बा लगेगा, मैं उस दिन अपने आप पीछे चला जाऊँगा, तुम अपना घर नहीं छोड सकती और मैं भी अपना घर छोड नहीं सकता।" इस प्रकार तहमीना और तुषार के बीच में दोस्ती बढ़ती है। तुषार तहमीना को गहराई से समझता है और उससे कहता है "देखो तहमीना वैसा तो हमारी बहुत कम टाइम की मुलाकात है। पर मैं तुम्हारे जीवन की एक-एक बात से परिचित हो चुका हूँ। तुम जिसे सुखी होना कहती हो न वह दरअसल सुख नहीं है, तुमने अपने को पत्थर मान लिया है, और अपने आप को घर के लिए, समाज के लिए ढाल लिया है, पर तुम यह बात भूल गयी हो कि तुम्हारी अपनी भी

इच्छाएँ है, तुम्हें अपने लिए भी जीता है। आदमी पहले खुद को देखता है, फिर दूसरे को।"

तुषार से मिली हमदर्दी के सहारे तहमीना जिन्दगी बिताती रहती है। उसके साथ दोस्ती बढ़ाने का प्रयास करती है, उसके सामने कमज़ोर बनती है। अपनी भावनाओं को ईमानदारी से अपनाना चाहती है। अतः वह तुषार के सामने आत्मसमर्पण करना चाहती है। बीच में कुछ दिनों तक तुषार से मुलाकात नहीं होती तब वह उसे ढूँढते हुए उसके दोस्त के घर जाती है। वह इस आशा से गयी थी कि शायद तुषार के बारे में अजय को कुछ पता हो। जब वह अजय के घर पहूँची तब उसने वहाँ तुषार को देखा। और तुषार तहमीना को देखकर चौंक गया। तुषार ने तहमीना को यह समझाने की कोशिश की अगर हम दोनों के संबन्धों की बात तुम्हारे परिवार तक पहूँचेगी तो तुम्हारी क्या स्थिति होगी? और तहमीना से कहा कि तुम मेरे पीछे मत आओ। बाद में तुषार परिवार सहित दिल्ली चला जाता है। यह सुनकर तहमीना चौंक गयी। तहमीना के मन में अशांति फैल गयी। इसलिए अजय ने उसे यह सलाह दिया कि वह कुछ दिनों के लिए बाहर चले जाए ताकि मन हल्का हो जाए।

तहमीना का मन अशान्त था। इसलिए मीनाक्षी और तहमीना दोनों एक मेला देखने के लिए जाते हैं। मेला देखकर तहमीना का मन शान्त होने लगता है। तब उस परिस्थिति में तुषार की चिट्टी मिलती है। उसे देखकर तहमीना चौंकती है और सारी घटनाएँ याद करती है। लेकिन वह उससे दोस्ती बढ़ाना नहीं चाहती। उसे पत्र भेज देती है। तहमीना जिन्दगी भर जिसके लिए इंतज़ार कर रही थी वह उसे मिला नहीं। फिर भी पैर तले की जमीन पर मज़बूत खडे होकर फलते फूलते जीवन को देखने की आशा रखती है।

अंत में तहमीना उस पलाश पुष्प के समान बन जाती है जो खुद वीरानी में रहकर दूसरों को बसंत बाँटती है।

विवेच्य उपन्यास का शीर्षक 'अकेला पलाश' कथावस्तु की दृष्टि से सार्थक बन पड़ा है। पलाश पुष्प का प्रयोग एक मध्यवर्गीय नारी के जीवन के संकेत के रूप में उपन्यासकार ने किया। इस रचना प्रक्रिया में उपन्यासकार श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ को सफलता मिली।

2.1.2 कोरजा

मेहरुन्निसा परवेज़ की एक प्रसिद्ध उपन्यास है 'कोरजा'। 'कोरजा' शब्द का आशय है - अनाज के कट जाने के बाद जो बालियाँ खेतों में रह जाती है और गरीब लोग उन्हें बटोरते हैं। विवेच्य उपन्यास 'कोरजा' में शोषित वर्गों का चित्रण किया गया है। साथ-साथ लेखिका ने यह कहने का प्रयास किया है कि गरीब घर की स्त्रियों को सभी प्रकार के शोषण का शिकार बनना पड़ता है।

उपन्यास के शुरुआत में नसीमा जो इस उपन्यास की नायिका है, रब्बो आपा के घर आयी है, उसकी बेटी रन्नो की शादी में भाग लेने। सालों बाद वह रब्बो आपा को देख रही थी। रफीक, शफीक और मुन्नु भी वहाँ आया हुआ था। उन लोगों को देखकर खुशी के मारे नसीमा के आँसू निकल पडे। शफीक ने जगदलपुर में बहुत बडी दरजी की दूकान खोल ली है। आपा ने बताया कि नानी के मरने के बाद साजो खाला को टाइफाइड हो गया। और वे भी इस दुनिया से चल बसी। एहसान भाई के बारे में पूछने पर आपा ने कहा कि उसकी शादी हो गयी और उसे दो बेटे भी है। मोना दीदी अपने घर में स्कूल चला रही हैं।

शादी की रस्म चलने लगी। काफी देर तक रस्म चलती रही। जब माहौल का घुटापन खत्म हुआ तब रन्नो ने नसीमा से कहा कि उसे बाथरूम ले चलो। बाथरूम जाकर वह उल्टी करने लगी और थककर पलंग पर लेट गयी। तब रब्बो आपा वहाँ आयी और उसने नसीमा से कहा कि "नस्सो इसे दिन चढ़े हैं, दोनों एकदम खुलकर साथ रहते थे, मेरी ही जिद्द पर यह शादी जल्दी हो रही है, वरना यह दोनों को तो कोई चिंता नहीं थी, क्या जमाना आ गया है।...."

रन्नो की इस अवस्था की जानकारी से नसीमा को पुरानी बातें एक-एक कर याद आने लगी थी।

रहमान खाँ की बीवी का नाम है अरमान बी। वह जीवन में बहुत कुछ सही थी। रोज पति-पत्नी में झंगडे होते थे। रहमान खाँ रईस थे। उन्हें बीवी और बच्चों से नफरत थी। बच्चों में दो लड़की और दो लड़के थे। दोनों लड़के छोटी उम्र में ही अल्लाह को प्यारे हो गये। रहमान खाँ ने कभी घर, बीवी और बच्चों की ओर ध्यान नहीं दिया। उन्हें बाहर की औरत का शौक था। इसलिए अरमान बी अपनी बेटी को पति की जासूसी करने भेज देती थी। अरमान बी की शादी बहुत कम उम्र में हुई थी। उनकी बेटी का नाम है फातमा। लड़की बडी हुई तो उसे घबराहट भी होने लगी। और बाप का प्यार भी उमड़ने लगा। अरमान बी समझ गयी कि यह बेटी के प्रति बाप का प्यार नहीं बल्कि एक मक्कार आदमी की वहशी आखों का पानी था। वह सतर्क हो उठी और फातमा को जल्दी से जल्दी ब्याह दिया। रहमान खाँ की मरज़ी के खिलाफ शादी हुई थी।

फातमा के पति का नाम है करीममियाँ। फातमा एक बार जो घर से बिदा होकर ससुराल गई तो लौटकर मायके नहीं आयी। फातमा के माँ-बाप भी उसे घर नहीं बुलाये। मायके से उपेक्षा पाकर फातमा ने पति के घर को ऐसे पकड़कर रखा कि कहीं छूट न जाए, हमेशा डर रहता कि पति का घर छूट जाएगा तो वह कहाँ ठौर पाएगी।

फातमा की इस कमज़ोरी को करीममियाँ अच्छी तरह समझ गए थे, इसलिए ज़रा-सा फातमा फन उठाती तो वह तुरंत झटके से नीचे कर देते। फातमा और करीममियाँ के हमेशा झगडे होते थे। इनके दो बच्चे है - नसीमा और मुनव्वर (मुन्ना)।

एक दिन करीममियाँ कुछ लोगों को बुलाकर घर आया। वह सबके सामने फातमा को तलाक देना चाहता था। लेकिन फातमा ने उन लोगों को घर से भगा दिया। इस गुस्से में करीममियाँ ने फातमा को पीटना शुरू कर दिया। और वह अपना ज़रूरी सामान लेकर बाहर चला गया। फातमा मार खाकर बेहोश पडी थी।

इस झगडे के बाद दादी की बीमारी और भी बढ़ गयी। एक दिन सवेरे दादी को सकरात लगी। तो अम्मा ने नसीमा से कहा "नसीमा, जा अपने अब्बा को बुला ला, कहना दादी को सकरात लगी है। जल्दी से दूध बख्शा लो, वरना कयामत तक माँ के दूध का कर्जा सिर रहेगा। वह डर-डर के अब्बा को बुलाने के लिए गयी। उसे डर था कि कहीं अब्बा उसे डाँटेगे या फिर मार न बैठें। नसीमा के बुलाने पर भी अब्बा नहीं आया। और दादी मर गयी। आज दूसरी मौत नसीमा के सामने हुई थी। पहली मौत तो उसके भाई की थी। उसके भाई मुन्ना की मौत बहुत छोटी सी उम्र में बुखार की वजह से हुआ था।

पहले तो अम्मा और अब्बा में लडाई होती तो अब्बा उन दोनों को गाँव भेज देता था, वहाँ पहले दादा-दादी रहते थे। या मामा के घर भेज देते। दादा-दादी के पास रहते वक्त ही बुखार से मुन्ना की मौत हो गयी थी।

दादी के दफन के बाद नसीमा का अब्बा आ गया। दादी की मौत के बाद जैसे सब उल्ट-पल्ट हो गया था। अम्मा पीलिया में पागल होकर मरी। अब्बा उसे छोडकर दूसरे शहर चले गये। जहूरमियाँ जो नसीमा के पडोसी है, नसीमा को नानी के घर पहुँच गए थे।

नसीमा ने पहली बार अपने ननिहाल को देखा था। उसे देखकर नानी को अपनी बेटी की याद आ गयी। नानी बैरायी-सी बकती जा रही थी और रोती जा रही थी। रोती हुई नसीमा को रब्बो आपा ने संभाला।

एक समय में नानी बडी शान से जीनेवाली औरत थी। नानी के घर में नसीमा के अलावा रब्बो आपा, साजो खाला, जो फातमा की बहन है और उनके तीन बच्चे रहते हैं।

साजोखाला फातमा की छोटी बहन है। मुन्नु पेट में था तभी साजो खाला विधवा हो गई थीं। नानी ने अपनी दूसरी बेटी की शादी बहुत धूमधाम से किया था। लेकिन शादी के छः महीने बाद साजोखाला घर में आकर बैठी। कुछ दिनों बाद सौतेली माँ से तंग आकर दामाद भी घर आ गया। नाना का इंतकाल हुआ था। नानी ने दामाद को एक दूकान किराये पर लेकर उसमें बिठा दिया। शुरु में दूकान चलाने का नया-नया जोश रहा। फिर वह बहुत जल्दी ही काम से उकता गया। दूकान घाटे में और कर्ज में चलने लगा। दूकान का घाटा भरने के लिए घर भी गिरवी रखना पडा। दामाद के पेट में जलन्धर हो गया। एक दिन वह गर्भवती बीवी को बेवा कर गया। घर जुम्मन खाँ के यहाँ गिरवी रखा था। उन्होंने एक दिन नानी और साजोखाला को अपने घर बुलाया। उन्होंने कहा कि "घर में रहने का किराया नहीं लूँगा अगर रोज रात साजो यहाँ आएगी तब।" इसी तरह साजोखाला ने सब को बचाने के लिए अपने को कुर्रबान कर दिया। नानी भी कुछ नहीं कर पाई।

राबिया - छोटा-सा नाम रब्बो। साजोखाला की सगी फूफी के लड़के की लड़की। देखने में खूबसूरत थी। पैदा होते ही माँ मर गई। बाप ने दूसरी शादी की। दादी के मरने के बाद वह बाप के साथ रहने लगी। उनकी बारह साल की उम्र में बाप भी मर गया। और वह सौतोली माँ के साथ रहती थी।

एक दिन उसके घर सौतेली माँ का रिश्तेदार जमशेद आया, छुट्टियाँ बिताने। जमशेद एक तीर से दो शिकार करने का आदी था। एक दिन रब्बो जमशेद की हक्स का शिकार हो गई। छुट्टी बिताकर जमशेद लौट गया। एक दिन रब्बो को पता चला कि वह माँ बननेवाली है। उसका गर्भ गिराने की सलाह कई औरतों ने दी। लेकिन सैतोली माँ तैयार नहीं हुई। वह कहती है कि अपने कर्म का फल उसे खुद भोगना चाहिए।

एक दिन जगदलपुर से खाला का पति आकर उसे ले गया। नानी ने रब्बो को खूब पीटा। सात महीने में उसे दर्द उठा और लड़का होकर मर गया। इसके बाद कई बरस लगे उसे अपने को संभालने में।

कम्मो नसीमा का पडोसी है। कम्मो के रिश्ते का भाई है एहसान। एहसान रब्बो को चाहता है। रब्बो को भी एहसान पसंद है। यह बात वे तीनों ही जानते हैं।

एक दिन कम्मो नसीमा को लेकर अमित के घर गया। कम्मो और अमित एक दूसरे से प्यार करते थे। अमित पत्रकार है। अमित के घर में उसकी माँ और दीदी रहती है। अमित को शराब पीने की बुरी आदत है।

कम्मो ट्रांसफर होकर जगदलपुर आई थी। नानी की पडोसिन होने से पहले वह अच्छे और शरीफ मोहल्ले के लिए काफी भटक चुकी थी।

कम्मो के भी माँ-बाप थे, पर वह बहुत कम उम्र में ही अकेली हो गई। चाचा और चाची ने उसकी देख भाल किया। उसकी पढ़ाई का भार उठाया। बी.ए. करके आगे पढ़ने को सोच रही थी, तब तक तो चाचा भी चल बसे। चाची और कम्मो, दो असहाय एक-दूसरे का सहारा बन गये। कम्मो ने आगे पढ़ने का इरादा छोट दिया और नौकरी कर ली।

नानी की पडोसिन बनने से पहले कम्मो शोना माँ नामक एक विधवा स्त्री की किरायेदार थी। वहाँ उसकी मुलाकात मोना और उनके परिवार से हुई। वे लोग भी उस औरत के किरायेदार थे। मोना कम्मो से भी बडी उम्र की थी। मोना के घर में वह, उसकी माँ, उसके दो भाई दीपू और अमित रहते थे। दीपू बचपन से ही पागल था। अमित एक पत्रकार था और वह बहुत शराब भी पीता था। मोना की माँ का नाम है मंदाकिनी। पहले वे लोग भी बडे मकान में रहते थे, जब से मोना के पिता का देहान्त हो गया, तब से उस घर को किराए पर देना पडा। मोना के ट्यूशन से मिलनेवाली रकम और किराए की रकम से उसकी गृहस्थी चलती थी।

कम्मो अमित के बिखरे-छितरे जीवन को धीरे से समेटने लगी। कम्मो के जीवन में बरसों के बंद कपाट को तोडकर पहली बार कोई पुरुष घुसा था।

एक दिन दीपू के कमरे का सॉकल लगाना भूल गयी। दीपू मौका पाकर घर से भाग गया और ट्रक के नीचे आकर मर गया। उसके मरने के बाद उन लोगों ने वह घर छोड दिया। और अपने घर जाकर रहने लगे। कम्मो को वह कब्रिस्तान लगता था। वह फिर से मकान की तलाश में निकल पडी। अमित ने ही नसीमा के घर के पासवाला मकान उसे दिला दिया। तब से वह नसीमा का पडोसी बन गया था।

एक दिन नसीमा, रब्बो, कम्मो, अमित, एहसान भाई और मोना दीदी चित्रकूट घूमने चले गये। वहाँ जाकर नसीमा ने मोना दीदी से शादी न करने का कारण पूछा। तो मोना दीदी ने बताया कि उसने भी प्यार किया है। और जिससे वह प्यार करती थी उससे उसकी शादी भी होनेवाली थी। लेकिन शादी होने से पहले एक एक्सीडेंट में उसकी मौत हो गयी। तब से उसने शादी का ख्याल अपने मन से निकाल दिया। उस हादसे को भुलाने के लिए घर की जिम्मेदारियों को उसने अपने कंधे पर उठा लिया। दीपू की मौत के बाद तो उसे जिन्दगी से मोह नहीं रहा। वह अब अमित और अपनी माँ के लिए जी रही है।

चित्रकूट से वापस घर में आने से पता चला कि रब्बो आपा को देखने मेहमान औरतें आई थी। रब्बो की शादी पक्की होनेवाली है। रब्बो ने यह खबर कम्मो और एहसान भाई तक पहूँचाने के लिए नसीमा से कह दिया। यह बात सुनकर कम्मो और एहसान दोनों चौंक गये। कम्मो, रब्बो और एहसान के शादी की बात नानी से कहने के लिए तैयार हुई तो एहसान ने उसे रोक दिया। उन्होंने कहा कि उसे बहुत सारी जिम्मेदारियाँ है जिसे निभाये बिना वह शादी नहीं कर सकता। यह बात सुनकर रब्बो का मन टूट गया।

रब्बो ने नसीम को बताया कि वह गर्भवति है। अब उसका दूसरा महीना चल रहा है। यह सुनकर नसीमा काँप गयी। एक दिन नसीमा और रब्बो ने अंडेवाली खाला के पास जाकर रब्बो का गर्भ गिरवाया।

रब्बो की शादी जिससे हो रही है वह दो बच्चों की बाप है। और उन बच्चों की सौतेली माँ बनना रब्बो नहीं चाहती थी। फिर भी वह शादी से इनकार नहीं कर पाई क्योंकि वह नानी पर बोझ बनना नहीं चाहती थी। इस तरह रब्बो की शादी हो गई।

रब्बो आपा की शादी के बाद जो काम घर में रब्बो आपा करती थी वह सब नसीमा को करना पडा। रब्बो की शादी के बाद नानी कंगाल हो गई। घर के बच्चों को भी गरीबी का एहसास हो गया।

एक दिन नसीमा को अब्बा का खत आया। उसमें लिखा है कि वह नसीमा को लेने आ रहा है। यह पढकर वह परेशान हो गई। यह बात बताने के लिए वह कम्मो के घर गयी। तब उसे पता चला कि अमित बीमार है। शराब के कारण उसके दोनों फेफडे खराब हो चुके है। डॉक्टर ने कह दिया है कि वह बच नहीं सकता।

अमित ने एक दिन कम्मो को बताया कि वह एक नपुंसक मर्द है। इसलिए अपनी कमज़ोरी को भूलने के लिए ही वह शराब पीता है। अमित की सच्चाई जानने के बाद कम्मो ने अमित से बात नहीं की। और उससे मिलने के लिए भी नहीं गयी। कुछ दिन बाद मोना दीदी ने बताया कि अमित अस्पताल में है, वह बीमार है।

नसीमा ने कम्मो को बताया कि वह जल्द ही अब्बा के साथ चली जायेगी। यह सुनकर कम्मो चौंक गयी। नसीमा को जाने की इच्छा नहीं थी। लेकिन वह नानी पर बोझ बनना नहीं चाहती थी। कम्मो को यह भी पता चला कि रब्बो ने हमल गिरवाया है।

कम्मो के साथ अमित को देखने नसीमा भी अस्पताल गयी थी। बाद में उसे पता चला कि अमित इस दुनिया से चल बसा। अमित के मरने के बाद कम्मो ने भी आत्महत्या कर ली। इसके बाद नसीमा एकदम अकेली हो गई।

नसीमा को अब्बा के साथ जाने का दिन आया। नानी ने नसीमा के लिए ढेर सारे पकवान बना दिए थे। नसीमा बहुत दुखी थी। जाने के वक्त साजोखाला रो रही थी। पर नानी एक बार भी नहीं रोई। दुख सहते-सहते जैसा उनका कलेजा पत्थर हो गया था। नसीमा रिक्शा में बैठ गयी। रिक्शा आगे बढ़ गया। थोडी देर बाद नसीमा ने पीछे देखा तो सब जा चुके थे। बस केवल नानी अकेली खडी एकटक जाते रिक्शे को देख रही थी। इन स्मृतियों में डूबी नसीमा को रब्बो आपा बाँह पकड़कर खींचती है तब उपन्यास का अंत होता है।

नसीमा अपनी जिन्दगी के भूली-बिसरी स्मृतियों को 'कोरजा' के रूप में चुनती है। इस प्रकार कथावस्तु की दृष्टि से इस उपन्यास का शीर्षक 'कोरजा' सार्थक बन पडा है।

2.1.3 समरांगण

'समरांगण' एक ऐसा उपन्यास है जिसकी कहानी भारत के इतिहास से जुडी हुई है। भारत की स्वतंत्रता के पहले शुरु होनेवाली कहानी स्वतंत्रता संग्राम उच्चस्थायी में पहूँचते ही समाप्त हो जाती है।

पंडित गोपीलाल की मिठाई का दूकान दिल्ली शहर के पाराठेवाली गली में है। गोपीलाल एक कश्मीरी पंडित है। उनका गाँव कश्मीर में है। वह अपनी पत्नी सुहासनी के साथ दिल्ली में बस रहा है।

एक दिन वह दूकान खोलने गया तो मार-काट, वाही-तबाही मचने लगी थी। अंग्रेज़ सैनिक, लोगों को मार रहे थे। गोपीलाल अपना दूकान बंद करके लुक-छिपकर घर पहूँचा। सुहासनी घर में घबराकर बैठी थी। वह दोनों दिल्ली छोडने का फैसला किया। सुहासनी और पंडित खाने पीने के कुछ समान इक्कटा करके घर से भाग गये।

पंडित और सुहासनी थके हारे से एक टीले के पास पहूँचे तो देखा एक चट्टान के पास कुछ लोग इक्कठे थे। गोपीलाल समझ गया कि वह पिंडारियों का काफिला है। पिंडारियो के साथ उनका पूरा परिवार था। वे लोग नर्मदा की तरफ जानेवाले थे। गोपीलाल ने उनसे मदद माँगा कि उसे और उसकी पत्नी को साथ ले चले। उन्होंने इसके बदले रकम माँगा। तभी गोपीलाल ने अपनी पत्नी का कंगन दे दिया। और उन लोगों के साथ चल पडा। पिंडारियों के सरदार बंगाली सिंह है। सुहासनी को कंगन जाने का दुःख सता रहा था। कंगन गोपीलाल के परिवार की धरोहर थी। जो उनकी माँ ने अपनी बहु को दिया था।

लंबी सफर के बाद वे लोग नर्मदा के किनारे पहूँच गये। वहाँ गोपीलाल की भेंट बूदाजान से हुई। वह अपूर्व सौन्दर्य की मलिका थी। नर्मदा के किनारे लगे मेले में

हर बरस बूँदाजान अपनी नौटंकी लेकर आती थी। बूँदाजान के सौन्दर्य से वह प्रभावित हो गया। और बूँदाजान भी गोपीलाल के आकर्षित रूप से प्रभावित हो गई थी।

तत्काल ठौर के लिए बंगालीसिंह ने गोपीलाल को मिट्टू सिंह का पता बता दिया। जो उनके एक परिचित व्यक्ति थे। गोपीलाल को जबलपुर शहर बहुत अच्छा लगा। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह यहाँ से कहीं नहीं जायेगा। वे लोग मिट्टूसिंह के घर पहूँच गया। वहाँ मिट्टूसिंह और उसकी पत्नी रहती थी। वे भले लोग थे। उन लोगों को बच्चे नहीं थे। उन्होंने गोपीलाल को अपने घर में ही रहने का इन्दज़ाम किया।

मिट्टूसिंह अंग्रेज़ों की छावनी के ठेकेदार है। वह ही अंग्रेज़ों के लिए सारा सामान पहूँचाता है। इन कामों में मिट्टूसिंह ने गोपीलाल को भी भागेदार बनाया। जल्दी ही गोपीलाल का व्यापार बढ़ने लगा। छावनी के लोगों से उसकी अच्छी मित्रता हो गई। धीरे-धीरे गोपीलाल बडे अधिकारियों तक पहूँच गया। वह अधिकारियों को नगर की सारी गुप्त खबरें लाकर देता था। अंग्रेज़ अधिकारी पंडित गोपीलाल के ज्योतिष ज्ञान से भी प्रभावित थे। मिट्टूसिंह ने अपने सारे व्यापार की जिम्मेदारी गोपीलाल को दी।

गोपीलाल को एक बेटा हुआ उसका नाम मोहनलाल रखा गया। वह सात बरस का हुआ तो मिट्टूसिंह जी ने उसे अंग्रेज़ों की छावनी स्कूल में दाखिला दिलवा दिया। मोहन को गरीबी, और लाचारी से घृणा थी। भारत की गरीबी उसे पसंद नहीं थी। वह अंग्रेज़ों को और उनके राज्य इंग्लैंड को पसंद करता था। मोहन को ईसाई धर्म अच्छा लगने लगा था। वह हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करता था।

गोपीलाल ने बूँदाजान के नृत्य का कार्यक्रम छावनी क्लब में करवाया। सब लोग बूँदाजान के नृत्य और सौन्दर्य से प्रभावित हो गये। गोपीलाल ने बूँदाजान के लिए वहाँ स्थायी निवास का इन्दज़ाम किया। ताकी गोपीलाल जब चाहे बूँदाजान से मिल सके।

गोपीलाल और बूँदाजान के बीच का रिश्ता और भी गहरा हो गया था। गोपीलाल ने मोहन को पढ़ाई के लिए लंदन भेजने का फैसला किया।

गोपीलाल ने जागीरी खरीद ली और वह जागीरदार हो गए। मिट्टू सिंह के पिता के दो भाई थे। संयुक्त परिवार या इसलिए पिता ने कोई वसियत नहीं की थी। मिट्टूसिंह के पिता तथा चाचा की मृत्यु के बाद मिट्टूसिंह की जायदाद में हिस्सा पाने के लिए चाचा के बेटों ने मुकदमा कर दिया। मिट्टूसिंह का अपना कोई बारिस नहीं होने के कारण भी मामला उलझ गया था। मिट्टूसिंह भी मन से उन्हें हिस्सा देने के लिए राज़ी थे, परन्तु उनका अपना स्वभाव चाचा के बेटों से मेल नहीं खाता था। यकायक मिट्टूसिंह के मन में विचार आया कि कोठी और बगीचा गोपीलाल के नाम करवा दिया जाए। मिट्टूसिंह ने यह सोचकर अपना जायदाद गोपीलाल के नाम कर दिया कि गोपीलाल कभी धोका नहीं देगा और बाद में वह ज़मीन वापस कर देगा।

बूँदाजान गोपीलाल की बच्चे की माँ बननेवाली थी। गोपीलाल जागीरदार के साथ अंग्रेज़ों के मुख्तार नियुक्त हो गए थे। बूँदाजान के बारे में मिट्टूसिंहजी उसकी पत्नी लता और सुहासनी को भी पता चल गया। सुहासनी बीमार पड़ गई। उसको गठिया वात था। गोपीलाल खुद अपने बेटे को बूँदाजान से और उनके बच्चे से मिलवाया। तभी माँ की बीमारी का कारण मोहन की समझ में आने लगा।

मोहन पढ़ाई के लिए लंदन चला गया। गोपीलाल को सब रायबहादुर कहलाने लगे। गोपीलाल ने मिट्टूसिंह का पुराना घर गिराकर नया घर बना दिया था। सारी सुख सुविधायें थी उस घर में। इतनी सूख-सुविधायें होते हुए भी सुहासनी को अपने पति का प्रेम नहीं मिल रहा था। उन्हें लकवा हो गया था। सुहासनी से गोपीलाल इतने दूर चले गये थे कि बस गोपीलाल को वह आँधी की तरह आते और जाते देख लेती थी। बीमारी के बाद उनका कमरा भी अलग कर दिया गया।

सुहासनी अपने बेटे मोहन का ब्याह जल्दी से जल्दी करवाना चाहती थी। पहले गोपीलाल ने मना कर दिया। फिर चारों ओर से दबाव पाकर आखिर गोपीलाल ने मोहन के ब्याह की अनुमति दे दी।

पृथादेवी मोहन की दुल्हन बनकर आयी। शादी बडी ही घूमधाम से हुई थी। पृथादेवी स्वतंत्र विचारोंवाले घर में पली थी। उसके परिवार के सभी लोग अंग्रेज़ों के विरुद्ध थे। शुद्ध, परंपरावादी परिवार था। उसका दोनों परिवार की संस्कृति एकदम भिन्न थी। पृथा एक विदुषी कन्या थी। हमेशा प्रथम श्रेणी में ही उसने पढ़ाई पूरी की थी। उसने हिन्दी और संस्कृत पढी थी। उसे अंग्रेज़ी नहीं आती थी। यह बात मोहन को अच्छा नहीं लगा। पहले ही दिन वह समझ गई कि उसकी आवश्यकता पति से ज्यादा अपनी सास सुहासनी को थी। शादी के पहले दिन मोहन घर नहीं आया। वह अपने इंग्लेंड के मित्रों के साथ पार्टी में व्यस्त था। ब्याह के पूरे आठ दिन बाद जब मोहन के सभी साथी इंग्लैंड चले गए तब मोहन को घर के बारे में याद आया। शादी के पूरे एक माह बाद मोहन वापस इंग्लैंड चला गया अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए। दोनों परिवार की संस्कृति एकदम भिन्न थी।

पृथा ने दो जुडवा बच्चियों को जन्म दिया। घर के लोग इस आशा में थे कि पृथा बेटे को जन्म देगी। लड़कियों के जन्म की घबर से सब स्तब्ध रह गए।

दोनों जुडवा बच्चियों के नाम चंद्रकला और चंद्रप्रभा रखा गया। चंद्रकला बडी थी तथा देखने में अद्‌भुत सुंदर थी। चंद्रप्रभा उतना सुन्दर नहीं थी। उसी तरह दोनों के स्वभाव में भी काफी अंतर था। चंद्रकला सारे घर को सर पर उठा लेती थी। और चंद्रप्रभा सारा दिन चुप पडी रहती थी। चंद्रकला बुद्धि की बहुत तेज़ थी और चन्द्रप्रभा बुद्धि और शरीर से कमज़ोर थी। चन्द्रकला अपने दादा रायबहादुर गोपीलाल की सोहबत

में पलने लगी। और चन्द्रप्रभा माँ का आँचल पकडकर बढ़ने लगी। चन्द्रकला को चन्द्रप्रभा ज़रा भी पसंद नहीं थी। लेकिन चंद्रप्रभा को चंद्रकला पसंद थी।

चंद्रकला और चंद्रप्रभा का पाँचवाँ जन्मदिन मनाया गया। चंद्रप्रभा का जन्मदिन देशी तरीके से मनाया गया। वही चंद्रकला का जन्मदिन अंग्रेज़ी तरीके से मनाया गया। चंद्रकला के जन्मदिन पर बूँदाजान भी आयी थी। जब से चंद्रकला का जन्मदिन मनाया गया तब से बूँदाजान कोठी पर आने लगी थी। वरना इससे पहले कभी नहीं आती थी।

सुहासनी एक दिन पृथा के कमरे में आयी। और उसने उस घर का रहस्य बताया। उसने कहा कि जब यह हवेली तोडी गई तो इसमें नीचे गडा खज़ाना निकला जिसकी जानकारी मिट्टूसिंह को भी नहीं था और न गोपीलाल ने मिट्टूसिंह को पता लगने दिया। उस खजाने से ही यह सब वैभव प्राप्त हुआ। और मिट्टूसिंह को लगा कि गोपीलाल ने अंग्रेज़ों से धन कमाकर सब जोडा तथा बताया।

शहर में नये कमीश्नर आ चुके थे। गोपीलाल कमीश्नर को मिलने गये। कमीश्नर ने गोपीलाल को कांग्रस का अध्यक्ष बनने को कहा। ताकी उनका सारा रहस्य जान सके और उन्हीं के हथियारों से उन पर वार कर सके।

बूदाजान दूसरी बच्चे के माँ बननेवाली है यह सुनकर गोपीलाल को थक्का सा लगा। गोपीलाल इस खबर से खुश नहीं थे। उनको डर इसबात का है कि अगर वह हिन्दुस्तान के किसी बडे पद पर पहूँच जायेगा तो उसके इज्ज़त का क्या होगा।

गोपीलाल दिल्ली चले गये काँग्रस में शामील होने के लिए। और वह काँग्रस पार्टि का अध्यक्ष भी बन गया। इसी बीच बूँदाजान ने एक सुन्दर बेटी को जन्म दिया। और बूँदाजान ने उसका नाम जुही रख दिया। बच्चे के जन्म की सूचना वह पंडित को देना नहीं चाहती थी क्योंकि पंडित को अभी अपनी इज्जत और मर्यादा का अधिक ध्यान

रहने लगा है। बूँदाजान अपनी बेटी को कलाकार बनाकर फिल्म कंपनी में डाल देना चाहती थी। क्योंकि जो उसके साथ हुआ वह अपनी बेटी के साथ होने नहीं देना चाहती थी। उसे बहुत बडी अभिनेत्री बनाना चाहती थी।

पृथादेवी बीमार पड गयी। डॉक्टर नज़ीर अहमद उसे देखने आए। तभी डॉक्टर ने उसे काँग्रस में काम करने का सुझाव दिया। पृथा के परिवार के सभी लोग काँग्रेस में काम कर रहे हैं।

दादाजी और डैडी को चन्द्रप्रभा बिलकुल भी पसंद नहीं थी। प्रभा पढने में सबसे आगे थी। लेकिन चंद्रकला पढ़ाई में पीछे थी। हमेशा फेल हो जाती थी। मिट्टूसिंहजी का स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरता जा रहा था।

आग की तरह सबजगह यह खबर फैली कि मिट्टूसिंहजी का देहान्त हो गया। मिट्टूसिंहजी को पंडित गोपीलाल ने मुखाग्नि दी। कुछ दिन बाद पता चला कि गोपीलाल की फैक्टरियों में हडताल हो गया है। और इनके भाग-दौड में थे गोपीलाल और मोहनलाल। उसी समय एक दिन सुहासनी देवी का देहान्त हो गया। और यह समाचार गोपीलाल और मोहनलाल को नहीं दे पाया। वे शहर के बाहर थे इसलिए उनसे संपर्क नहीं हो पाया। तीन दिन बाद उनकी अंतिम क्रिया कर दी गई। गोपीलाल और मोहनलाल जब लौटे तो यह समाचार सुनकर काँप उठे। गोपीलाल को पत्नी के बिना जीवन में पहली बार अकेलापन महसूस हुआ।

पृथा के भाई हरिदेव जो असहयोग आन्दोलन में भाग ले रहा था, उसको फाँसी हो गई थी।

मोहन और पृथा के बीच की दूरियाँ बढ़ती जा रही थी। अब गृहस्थी में पृथा का मन नहीं रमता था। डॉ. अहमद हमेशा पृथा को घर से बाहर निकलकर समाज की

सेवा करने पर उक्साता रहा। एक दिन गोपीलाल को खबर मिला कि उनकी बहु डॉ. अहमद के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग ले रही है। उसे यह सुनकर थका-सा लगा।

बंगाली सिंह, जिसकी सहायता से गोपीलाल को मिट्टूसिंह की घर मिला था, उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। इसके बाद कई दिनों से वह घर के बाहर नहीं निकला था। एक दिन वह बूँदाजान के घर गया तो उस घर में ताला लगा हुआ था। सलमा से पता चला कि बूँदाजान अपनी बेटी को फिल्म कंपनी में काम करवाने के लिए बंबई चली गयी।

डॉक्टर अहमद को अंग्रेज़ों ने गोली मार दिया। यह सुनकर पृथा को बहुत दुःख हुआ। डॉक्टर अहमद और पृथा के बीच गहरी दोस्ती हो गई थी। इसलिए डॉक्टर अहमद के मौत के बारे में सुनकर वह अपने को संभाल नहीं पा रही थी। डॉक्टर के मौत के बाद पृथा लगातार बीमार रहने लगी थी। उनका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा था। अचानक एक दिन पृथा इस दुनिया से हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो गई।

अब भी नर्मदा के तट पर मोहन और अमर कभी-कभी मिलते थे। एक दिन अंग्रेज़ों ने मोहन के दोस्त अमर को मोहन समझकर गोली मारी। अमर के माता-पिता का दुःख देखकर गोपीलाल समझ गया कि जिसके लिए वह अपने को और अपने लोगों को नकार रहे थे, वे ही उसे धोका दे रहे थे। गोपीलाल को लगा कि वह जीवन के समरांगण में पूरी तरह असफल हुआ है। अंग्रेज़ों की धोखा-धडी से दुःखी होकर गोपीलाल ने अपना सब कुछ पोतियों के नाम लिखकर जबलपुर से जाने का फैसला किया। दिल्ली से गोपीलाल जिस वेष में जबलपुर पहूँचे उसी वेष में वह वापस दिल्ली जाना चाहता था। दिल्ली जाने के पहले वह अपना पुराना साथी बंगाली सिंह से मिलने गया। बंगाली सिंह ने भी गोपीलाल के साथ आने की इच्छा प्रकट की। जिसप्रकार जबलपूर वे आये थे, उसी प्रकार खाली हाथ, गोपीलाल और बंगाली सिंह वापस चले गये।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने निम्नवर्ग की लाचारी, धोखे-बाज़ी, छल-कपट, शोषण आदि को अच्छे ढंग से चित्रित किया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के अनुसार यह कहा जा सकता है कि हिन्दी उपन्यास साहित्य के महिला उपन्यासकारों में 'मेहरुन्निसा परवेज़' का महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न प्रकार की विपरीत स्थितियों के रहते हुए भी मेहरुन्निसा परवेज़ साहित्य लेखन, समाज सेवा तथा संपादन के क्षेत्र में जो कुछ कर सकी है, वह सराहनीय ही है। निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि मेहरुन्निसा परवेज़ का कथा-साहित्य उनके जीवन के तमाम उतार-चढ़ावों घात-प्रतिघातों व घुटन की संपूर्ण अभिव्यक्ति है।